संचार

विद्यार्थियों की कलम से...

READY FOREVER

तिथि– चैत्र/शुक्ल पक्ष/एकादशी/संवत 2082/युगाब्द 5127, अप्रैल 2025

भारतीय नववर्ष विशेषांक

प्रकृति का जयघोष: विक्रम संवत 2082 के साथ नई उमंगों, नई आशाओं का आगमन

ऋतुराज वसंत अपने पूर्ण यौवन पर है। फाल्गुन के रंग–बिरंगे उल्लास और पुष्पों की मधुर सुगंध से संपूर्ण वातावरण आनंदित हो उठा है। प्रकृति नवजीवन से भर उठी है। वृक्ष अपनी पुरानी पत्तियों का परित्याग कर कोमल कोपलों से सुसज्जित हो रहे हैं, मानो नवीन आशाओं और ऊर्जा का स्वागत कर रहे हों। यह सौंदर्य और उल्लास भारतीय नववर्ष के आगमन का संकेत देता है। हिंदू पंचांग के अनुसार, नववर्ष की शुरुआत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होती है, जिसे विक्रम संवत या नव संवत्सर के नाम से जाना जाता है। इस वर्ष, हिंदू नववर्ष 30 मार्च 2025 को आरंभ हुआ। जिसके साथ ही 2082 विक्रम संवत आरंभ हो गया है।

भारतीय नववर्ष मात्र एक तिथि नहीं, बल्कि प्रकृति का सजीव संदेश है। पुराने का विसर्जन व नए का अभिनंदन। महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने भी इसी दिन से दिन, मास, वर्ष और युगों की गणना प्रारंभ की थी। इसी गणना के आधार पर निर्मित पंचांग आज भी ग्रहों, चंद्रमा और सूर्य की गति का सटीक निर्धारण करता है, ठीक वैसे ही जैसे आधुनिक युग में सैटेलाइट्स द्वारा गणनाएँ की जाती हैं। भारतीय नव वर्ष के दिन सुबह सवेरे स्नान कर, मंदिर की साफ सफाई कर दीप जलाकर, सभी की सुख समृद्धि की मंगल कामना की जाती है। हवन यज्ञ पूजा पाठ के उपरांत अपने सामर्थ्य अनुसार अन्न धन का दान कर भोजन ग्रहण करते हैं ।इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ***भारतीय नववर्ष केवल पंचांग में अंकित एक तिथि नहीं, बल्कि प्रकृति और ब्रह्मांड का एक महत्वपूर्ण संदेश है.....***

भारतीय नववर्ष के वैज्ञानिक आधार

हंदू नववर्ष चंद्र–सौर कैलेंडर पर आधारित है, जो ग्रहों की चाल और खगोलीय गणनाओं का अद्भुत समायोजन प्रस्तुत करता है। यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि विज्ञान और सटीक गणितीय आधार पर निर्मित है। जो इसे विश्व के अन्य कैलेंडरों से अलग और विशिष्ट बनाता है।

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं कि जब आधुनिक खगोल. विद उन्नत तकनीकों के सहारे ग्रह–नक्षत्रों की गति का अध्ययन कर रहे हैं, यह जानना दिलचस्प होगा कि भारतीय ज्योतिष के विद्वानों ने वैदिक युग में ही भविष्यवाणी कर दी थी कि सूर्य ग्रहण एक निश्चित दिन और एक निश्चित समय पर होगा। यह समय गणना युगों बाद भी पूरी तरह सटीक साबित हो रही है।

इसी गणना के आधार पर मानी गई है जगत की रचना

गणनाओं के आधार पर माना गया है कि यह दिन सृष्टि रचना का पहला दिन होता है। इस दिन से एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 109 वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारंभ की थी। साथ ही इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का राज्याभिषेक भी हुआ था. इसके अलावा, यह भी माना जाता है कि देवी शक्ति की पूजा की शुरुआत और युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।

चैत्र–मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेहनि ।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति ।।

जानें क्या है विक्रम संवत

विक्रम संवत की शुरुआत राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने की थी और यह अंग्रेजी कैलेंडर से 57 साल आगे है। 2025+57=2082 अर्थात अभी 2082 विक्रम संवत चल रहा है। इसकी समयावधि 354 दिन की होती है और बचे हुए 10 दिन को अधिक मास या चंद्रमास के रूप में माना जाता है। उस समय के बड़े खगोल शास्त्री वराहमिहिर की सहायता से विक्रम संवत को बढ़ाने में मदद मिली। विक्रम संवत से ही साल में 12 महीने और सप्ताह में 7 दिन की शुरुआत हुई थी।

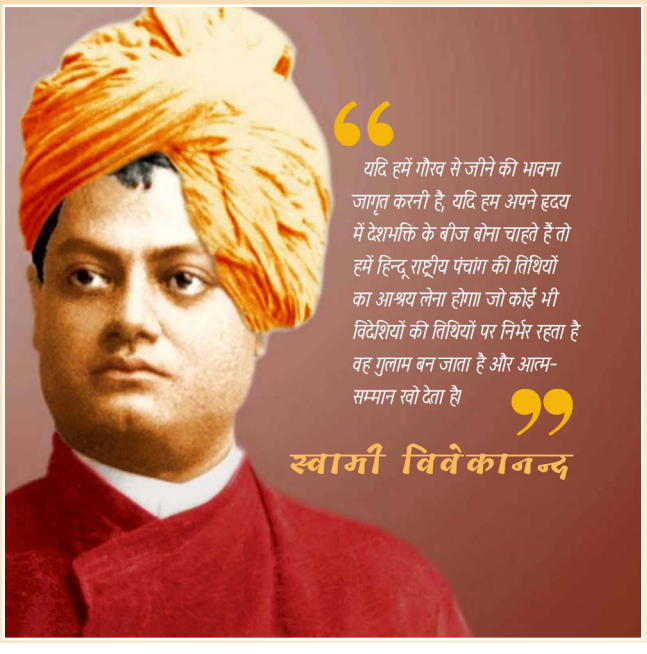

भारतीय नववर्ष की विशेषताएं

- चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को भारतीय नववर्ष मनाया जाता है।
- सूर्य देव और चंद्र देव दोनों मीन राशि में विराजमान होते हैं।
- इसी दिन शक्ति स्वरूपा नौ देवियों की पूजा-अर्चना के लिए चैत्र नवरात्र शुरू होते हैं।
- भारतीय नववर्ष की शुरुआत चंद्र-सौर गणना पर आधारित पंचांग के अनुसार होती है।
- इस दिन ब्रह्मा ने इस सृष्टि की रचना की थी, ऐसी मान्यता है।
- इस दिन ही भगवान राम और युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था।
- सर्वप्रथम इसकी शुरुआत राजा विक्रमादित्य ने की इसलिए इसे विक्रमी संवत कहा जाता है।
- शुभ कार्यों का शुभारंभ एवं नव संकल्प लेने के लिए श्रेष्ठ दिन माना गया है।
- इसी दिन से पतझड़ ऋतु के उपरांत बसंत ऋतु की शुरुआत होती है।
- पेड़ पौधों पर नये पत्ते अंकुरित होते हैं प्रकृति हरीभरी खिलखिलाती नजर आती है।
- सुनेहरी आभा लिए फसलें पकने को तैयार, वैशाखी पर उनकी कटाई शुरू होती है।
- देश में नववर्ष को अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग नामों से जाना जाता है।
- सभी हिन्दू धार्मिक त्योहार विक्रमी संवत पर ही आधारित हैं।
- भारतीय कैलेंडर और ग्रेगोरियन (अंग्रेजी) कैलेंडर के मध्य 57 वर्ष का अंतर है।

पहला महीना चैत्र और आखिरी फाल्गुन

नवरात्रि की शुरुआत से हिंदू नववर्ष का आरंभ हो जाता है। हिंदू कैलेंडर का पहला महीना चैत्र और आखिरी महीना फाल्गुन होता है। हिंदू कैलेंडर में कुल 12 माह होते हैं जो इस प्रकार है– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन।

इसके साथ ही हर मास को दो भागों में बांटा जाता है। कृष्णपक्ष और शुक्ल पक्ष। कृष्ण पक्ष में चांद घटता है और शुक्लपक्ष में चांद बढ़ता है। दोनों पक्ष प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी आदि चलते हैं। कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन चंद्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता जिसे अमावस्या कहा जाता है। जबकि शुक्ल पक्ष के अंतिम दिन (यानी पूर्णिमा को) चांद पूरे यौवन पर होता है।

100 साल बाद इस दिन 5 ग्रहों का योग: विक्रम संवत 2082, 30 मार्च से शुरू हो रहा है और इसके राजा और मंत्री दोनों ही सूर्य देव हैं। ज्योतिषाचार्य एसडी शास्त्री के अनुसार, यह नव वर्ष सभी के लिए बेहद शुभ सिद्ध होगा। क्योंकि 100 साल बाद इस दिन 5 ग्रहों की युति होने जा रही है। दरअसल, इस दिन चंद्रमा, शनि, बुध, राहु और सूर्य की मीन राशि में युति से बुधादित्य योग और मालव्य राजयोग का निर्माण होने जा रहा है। इन शुभ संयोगों के कारण विक्रम संवत कुछ राशियों के लिए बहुत ही शुभ माना जा रहा है।

संचार
विद्यार्थियों की कलम से...
READY FOREVER

युवाओं ने शहीदों के बलिदान को किया याद

शौर्य गाथाएं हमें प्रेरित कर मिलकर चलने के संकल्प को दोहराती हैं : प्रो. एस.के.तोमर

'अमर शहीद दिवस' पर रैली और शौर्य गाथाओं पर आधारित 'ओपन माइक' का आयोजन

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विश्वविद्यालय,वाईएमसीए, फरीदाबाद में राष्ट्र के वीर शहीदों के बलिदान को नमन करते हुए, शहीदी दिवस के अवसर पर रैली और ओपन माइक कार्यक्रम में प्रस्तुतियों ने वातावरण को देशभक्ति से ओतप्रोत किया। इसमें विद्यार्थियों ने नृत्य, गीत, संगीत, नाटक के माध्यम से वीर शहीदों को नमन करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शहीदी दिवस, स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिद. ान की याद में प्रतिवर्ष 23 मार्च को मनाया जाता है, जो 1931 में इसी दिन शहीद हुए थे।

कार्यक्रम की शुरुआत रैली से हुई जिसमें संचार एवं मीडिया तकनीकी विभाग के विद्यार्थियों के साथ विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के सैंकड़ों छात्रों ने हाथों में तिरंगा लेकर वन्देमातरम और भारत माता की जय के नारेबाजी की। उन्होंने देशभक्ति के जयघोष से परिसर गुंजायमान कर दिया। रैली सीवी रमन ब्लॉक से कलाम चौक तक पहुंची। रैली का समापन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

कुलपति प्रो.सुशील कुमार तोमर ने कहा कि शौर्य गाथाएं हमें प्रेरित कर शहीदों के दिखाए मार्ग पर चलने और देश की समृद्धि के लिए मिलकर काम करने के संकल्प को दोहराती हैं।

जे.सी. बोस विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया तकनीकि विभाग द्वारा आयोजित अमर बलिदान रैली में शामिल विद्यार्थी

शहीदों का बलिदान हमें सदैव याद दिलाता रहेगा कि देश की स्वतंत्रता कितनी अनमोल है : डॉ पवन सिंह

संचार एवं मीडिया तकनीकी विभागाध्यक्ष डॉ. पवन सिंह ने रैली के दौरान युवाओं में उत्साह भर प्रेरित करते हुए शहीदों के प्रति भाव प्रकट करते हुए कहा कि शहीदों का बलिदान हमें सदैव याद दिलाता रहेगा कि देश की स्वतंत्रता कितनी अनमोल है और इसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। आज हम उन सभी ज्ञात और अज्ञात शहीदों को नमन करते हैं, जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया। कुलपति प्रो.सुशील कुमार तोमर ने कहा कि शहीदों के दिखाए मार्ग पर चलकर हमें अपने देश की समृद्धि के लिए सभी को साथ लेकर चलने का संकल्प लेने की जरूरत है। देश हमे देता है सबकुछ हम भी तो कुछ देना सीखें, भाव के वशीभूत होकर युवा पीढ़ी को अपना आचरण और विचरण लक्षित करना होगा। इस मौके पर युवाओं ने देशभक्ति के गीत गाए और कहानीकारों ने शहीदों के जीवन से जुड़ी प्रेरक कहानियां सुनाईं।

Pink Sunday On Cycle

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पहल के तहत, विश्वविद्यालय के आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) ने पिंक सन्डे ऑन साइकिल नामक एक अनूठा कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में महिला संकाय, कर्मचारी सदस्यों और छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी प्रतिभागी गुलाबी रंग के परिधानों में सजे, जो महिला शक्ति और एकता का प्रतीक था।

डिजिटल युग में सफलता का मंत्र: आईआईटी रुड़की व इंडोनेशिया विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने किया मार्गदर्शन

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए फरीदाबाद के प्रबंधन अध्ययन विभाग ने स्किल डेवलपमेंट और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। रुड़की के प्रोफेसर संतोष रांगनेकर और इंडोनेशिया विश्वविद्यालय के डॉ. यांकी हरतिजास्ती ने छात्रों और शिक्षकों को संबोधित किया।

प्रोफेसर रांगनेकर ने डिजिटल परिवर्तन के इस चरण के दौरान कौशल के विकास पर अंतर्दृष्टि प्रदान की। उन्होंने विभिन्न प्रकार के कौशल, कौशल के महत्व, एटीएस ट्रैकिंग सिस्टम, प्रतिभा अधिग्रहण प्रथाओं और हार्ड स्किल्स के महत्व पर चर्चा की।

उन्होंने मशीन लर्निंग, एआई, बिग डेटा एना. लिटिक्स जैसे डिजिटल परिवर्तन क्षेत्रों के लिए आवश्यक नए कौशल सीखने, विकसित करने के लिए मंत्र पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने छात्रों को इस डिजिटल युग में खुद को ढालने के लिए चार सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करने का सुझाव दिया: लचीलापन, अनुकूलन क्षमता, स्मार्टनेस और स्थिरता।

प्रदूषण पर प्रहार: ऑटोमोबाइल में एमिशन कंट्रोल पर विशेष कार्यशाला

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा रॉयल एनफील्ड प्रशिक्षण केंद्र में ऑटोमोबाइल में एमिशन कंट्रोल विषय पर एक दिवसीय विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला स्नातक छात्रों और शोधार्थियों के लिए आयोजित की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में ऑटोमोटिव प्रौद्योगिकी की नवीनतम पहलों से अवगत कराना रहा । कार्यशाला में विश्वविद्यालय और रॉयल एनफील्ड प्रशिक्षण केंद्र के विशेषज्ञ वक्ताओं ने अपने अनुभव साझा किए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डीन (एफईटी) प्रोफेसर राज कुमार ने प्रदूषण को कम करने में ऑटोमोबाइल एमिशन कंट्रोल की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। मैकेनिकल इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अरविंद गुप्ता ने इस तरह के कार्यक्रमों के महत्व पर जोर दिया, जो इंजीनियरिंग के भविष्य को आकार देने में सहायक होते हैं।

कार्यशाला के समन्वयक डॉ. भूपेंद्र यादव ने आधुनिक ऑटोमोबाइल प्रौद्यो. गिकियों के व्यावहारिक अनुप्रयोगों की जानकारी दी। रॉयल एनफील्ड के दीपिंदर सिंह ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का समापन डॉ. भूपेंद्र यादव के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिन्होंने सभी वक्ताओं और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। यह कार्यशाला ऑटोमोबाइल उद्योग में उत्सर्जन नियंत्रण के महत्व और इसके भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यशाला के समापन के उपरांत समूहचित्र में विभाग के चेयरपर्सन प्रो. अरविंद गुप्ता व अन्य

J.C. BOSE UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, YMCA
FARIDABAD
HARYANA
विद्या परम् भूषणम्

संचार

विद्यार्थियों की कलम से...

READY FOREVER

नए युग की नई सीख: जो जरूरी नहीं, उसे छोड़ना सीखें

द आर्ट ऑफ लीविंग यानि कि "छोडना सीखना" भी एक कला है, यह जानना मानना कि जिन्दगी एक अमूल्य उपहार है और उसे महफूज रखने के लिए हमारा प्रत्येक प्रयास अनिवार्य है उस प्रयास में कभी कभी 'ना' कहना और कुछ बातों, आदतों स्थितियों को छोडना भी पड़ता है जैसे कि डर को छोड़ कर उम्मीद की ओर, संयम और जिन्दगी की ओर बढना, हर नकारात्मकता को छोड़ना, अति को छोड़ना, समय के पीछे भागना छोड़ना, भूतकाल की उपलब्धि के नशे की निष्क्रियता को छोड़ना।

आर्ट ऑफ लीविंग से आर्ट ऑफ लिविंग का सफर

तारत्मय, तालमेल, तर्कसंगत होना ये सभी जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन हमने वियोग का भी अनुभव किया है, परन्तु भूलना और अस्वीकार करना एक खुशहाल और संघर्षपूर्ण जीवन जीने के लिए 'छोड़ने की कला' हैं। वो सब कारक जो इस जिन्दगी को जीने में बाधक बने उन्हें छोड़ कर जीवन की ओर हमारा रूख ही हमें आगे आने वाली समस्याओं से निबटने में सहायता करेगा। आगे बढ़ें, जीवन में आपको देने के लिए बहुत कुछ है, जीवन एक उम्मीद की किरण है। आपकी ईमानदारी, समर्पण और चेतनता हमेशा हैप्पी यू के लिए नए रास्ते खोलती हैं क्योंकि शांति चाहना– पाना एक दैनिक, साप्ताहिक, मासिक अनुभूति है। धीरे–धीरे विचारों को बदलना, धीरे–धीरे पुरानी रूढियों को छोडना, सरलता से नए युग में अपने आप को ढालना आर्ट आफ लीवींग से आर्ट आफ लिविंग का सफर है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि छोड़ना हार नहीं है, बल्कि एक मुक्ति है। यह हमें उन बंधनों से मुक्त करता है जो हमें आगे बढ़ने से रोकते हैं और हमें नए अवसरों के लिए तैयार करते हैं। जब हम मैं से हम की ओर बढ़ते हैं, तो हम एक ऐसे समुदाय का निर्माण करते हैं जहां हर कोई समर्थित और मूल्यवान महसूस करता है। यह हमें एक दूसरे के साथ जुड़ने और एक दूसरे से सीखने की अनुमति देता है।

हम आज महसूस करते हैं कि इस फास्ट ट्रैक तकनीक से प्रेरित युग में मनुष्य चांद पर तो है पर मन की शांति आज भी उसे परम ध्येय –सी महसूस होती है। शांति और खुशी के पल संयमित मन से शुरू होते हैं जो कि नियमित अभ्यास से ही संभव है।

हमने कोविड के दौरान कई सबक भी सीखे जैसे परिवार, रिश्ते, दोस्त, जिन्दगी के प्रति सावधानियां, प्रकृति के साथ संतुलन, करुणा का जीवन पर प्रभाव, सहायता करना, आगे बढ़ना, सीखना, आत्म प्रतिबंध, आत्मनिरीक्षण और सभी से सहानुभूति, यह सब एक सुखी और शांत जीवन जीने के माध्यम हैं। जिसके लिए हम सभी मिलकर कई जरूरी स्थितियों और शर्तों का पालन भी कर रहे हैं। मेरा घर, मेरा पैसा, मेरा सब कुछ, सब मेरा परन्तु जो महत्वपूर्ण था वो था, मेरा परिवार, दोस्त, समाज देश, दुनिया सुरक्षित रहें, सर्वे भवन्तु सुखिनः ।

आज की स्थिति है इसके लिए हम अपने अंदर सकारात्मकता के प्रवाह को बाधित करने वाले बुरे विचार को दूर करना सीखने का प्रयास करें। उन विचारों को छोड़ दें जो आपको आगे बढ़ने से रोकते हैं। अपने आपको ऐसे लोगों से दूर रखें जिनके अहितकारी, बुरे इरादे आपके सामाजिक और नैतिक रूप से सकारात्मक, प्रगतिशील कार्यों में बाधा बन जाते हैं। सभी बिना विचारे अपरिक्वतापूर्ण कार्यों को नहीं कहना भी सीखें। केवल आपको ही अपने आप को खुश रहने या न रहने का अधिकार है, यह दूसरे भी समझें।

कोविड के दौरान हमने देखा है कि कैसे बहुत से लोगों के हाथों से जिन्दगी रेत की तरह फिसल रही थी और पल पल जिन्दगी और मौत की जंग का डर कायम था, अभी भी डर हमारे अंदर जगह बनाए हुए है पर साथ ही दृढ़ निश्चयी मन लडने को तैयार भी है। अपनों को लगभग सभी ने खोया, दर्द सहा परन्तु आगे सजग और सुरक्षित रहना भी जरूरी है। हर दिन, हर पल कीमती है और इसे सावधानी से सहेजना भी उतना ही कठिन काम है पर नामुमकिन नहीं।

डॉ. प्रज्ञा कौशिक, मीडिया एजुकेटर

ज्ञान एवं समानता दिवस का रूप है आंबेडकर जयंती

विश्व के सबसे विशाल लोकतांत्रिक देश भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर का जन्मदिन 14 अप्रैल को हुआ। उनके जन्म दिवस को भारत सहित दुनिया भर में समानता दिवस और ज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनका समस्त जीवन समानता के लिए संघर्ष की गाथा रहा है जिससे प्रेरणा लेकर अनेकों प्रबुद्ध जनों ने उनपर पीएचडी कर उनकी प्रकांड विद्वता का प्रचार–प्रसार किया। विभिन्न शिक्षण उपाधियां प्राप्त डॉ. भीमराव आंबेडकर सैंकड़ों वर्षों से सभी के लिए एक प्रेरणा के स्रोत हैं। समाज के प्रति उनकी दूरदर्शिता अपने आप में एक उदाहरण है। आंबेडकर की 134 वीं जयंती है। पुणे में उनके अनुयायी सदाशिव रणपिसे ने 14 अप्रैल 1928 में पहली जयंती मनाई थी। उसके उपरांत देशभर में आंबेडकर जयंती के आयोजन की प्रथा शुरू हुई। आंबेडकर को 31 मार्च 1990 को मरणोपरांत सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित करके देश और समाज के प्रति उनके अमूल्य योगदान को नमन किया गया।

मध्य प्रदेश के डॉ. आंबेडकर नगर में उनके जन्म स्थल बौद्ध धम्म दीक्षा स्थल दीक्षाभूमि और नागपुर में उनकी समाधि स्थल चौत्य भूमि पर उनके करोड़ों अनुयायी एकत्रित होकर बाबा भीमराव को श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें याद करते हैं। जगह–जगह उनके चित्रों एवं भारतीय संविधान की प्रतिकृति से सजी शोभायात्रा में नीले रंग के झंडे लेकर उनके अनुयायी काफी संख्या में उनके नाम का जयघोष 'जब तक सूरज चांद रहेगा, बाबा तेरा नाम रहेगा' करते हुए शामिल होते हैं। डॉ. भीमराव आंबेडकर, जिनका योगदान भारतीय समाज के उत्थान में अतुलनीय है। उन्होंने समाज में समानता, जातिवाद के खिलाफ संघर्ष और दलितों तथा वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित किया। उनकी जयंती 14 अप्रैल को मनाई जाती है। दलित, वंचित वर्गों तथा जरूरतमंदों को भी अपने कर्म, श्रम की पराकाष्ठा के बल पर उनके दिखाए मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सफल होंगे तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कीर्ति झा
एमएजेएमसी प्रथम वर्ष

ज्योतिबा फुले जयंती: एक समाज सुधारक की विरासत

ज्योतिबा फुले की जयंती पर, मैं उनके जीवन और कार्यों को याद करना चाहता हूं। एक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने समाज में व्याप्त असमानता और अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी, और शिक्षा, सामाजिक न्याय और महिला अधिकारों के लिए काम किया। महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव में जन्मे ज्योतिबा फुले ने अपने जीवनकाल में कई चुनौतियों का सामना किया, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए काम करते रहे। ज्योतिबा फुले ने महिलाओं और दलितों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया और सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई थी। उन्होंने समाज में व्याप्त जाति प्रथा और अस्पृश्यता के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी थी।

ज्योतिबा फुले की पत्नी सावित्रीबाई फुले भी एक महान समाज सुधारक थीं। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ज्योतिबा फुले की जयंती हमें उनके आदर्शों और मूल्यों को याद दिलाती है। यह हमें समाज में व्याप्त असमानता और अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करती है।

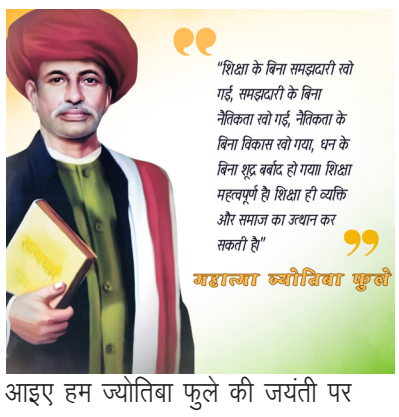

आइए हम ज्योतिबा फुले की जयंती पर उनके आदर्शों को अपनाने का संकल्प लें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए काम करें। हमें उनकी शिक्षा और सामाजिक न्याय के आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए। यह एक ऐसा अवसर है जो हमें समाज सुधारक और विचारक फुले के जीवन और कार्यों की याद दिलाता है। उन्होंने 19वीं सदी में भारतीय समाज में व्याप्त असमानता और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। ज्योतिबा फुले ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली हथियार माना और उन्होंने लड़कियों और दलितों के लिए स्कूल खोले। विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया और बाल विवाह का विरोध किया।

सौरभ शुक्ला
पीएचडी स्कॉलर

सभागार में आयोजित विश्व महिला दिवस के अवसर पर समूह चित्र में मुख्यमंत्री हरियाणा के ओएसडी प्रो. राज नेहरु, साथ में कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर एवं शिक्षकगण

कार्यक्रम में प्रस्तुति देती छात्रा

कार्यक्रम में कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्रो. लखविंदर सिंह व प्रो. नीलम तुर्क

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर

Celebrating Blooming of Campus Life

कार्यक्रम में मंच संचालन करतीं डॉ. सोनिया हुडा

कार्यक्रम में शामिल एसवीएसयू की कुलसचिव प्रो. ज्योति राणा को स्मृति चिंह भेंट करतीं प्रो. मनीषा गर्ग

मीडिया विभाग द्वारा आयाजित फूलों की होली।

विश्वविद्यालय के स्टाफ क्लब द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में होली खेलती फैकल्टी

Developed by students of CMT for Practical Training Purpose. Patron- Prof. Sushil Kumar Tomar, Co-Patron Prof Anuradha Sharma, Prof. Pawan Singh. Editorial Team- Anju Singh, Dushyant Tyagi. Student Fraternity-Bhawana, Yogesh, Kirti Jha, Astha Tiwari, Riddhima, Special Thanks: Jitender Singh Yadav (PRO, JCBUST)